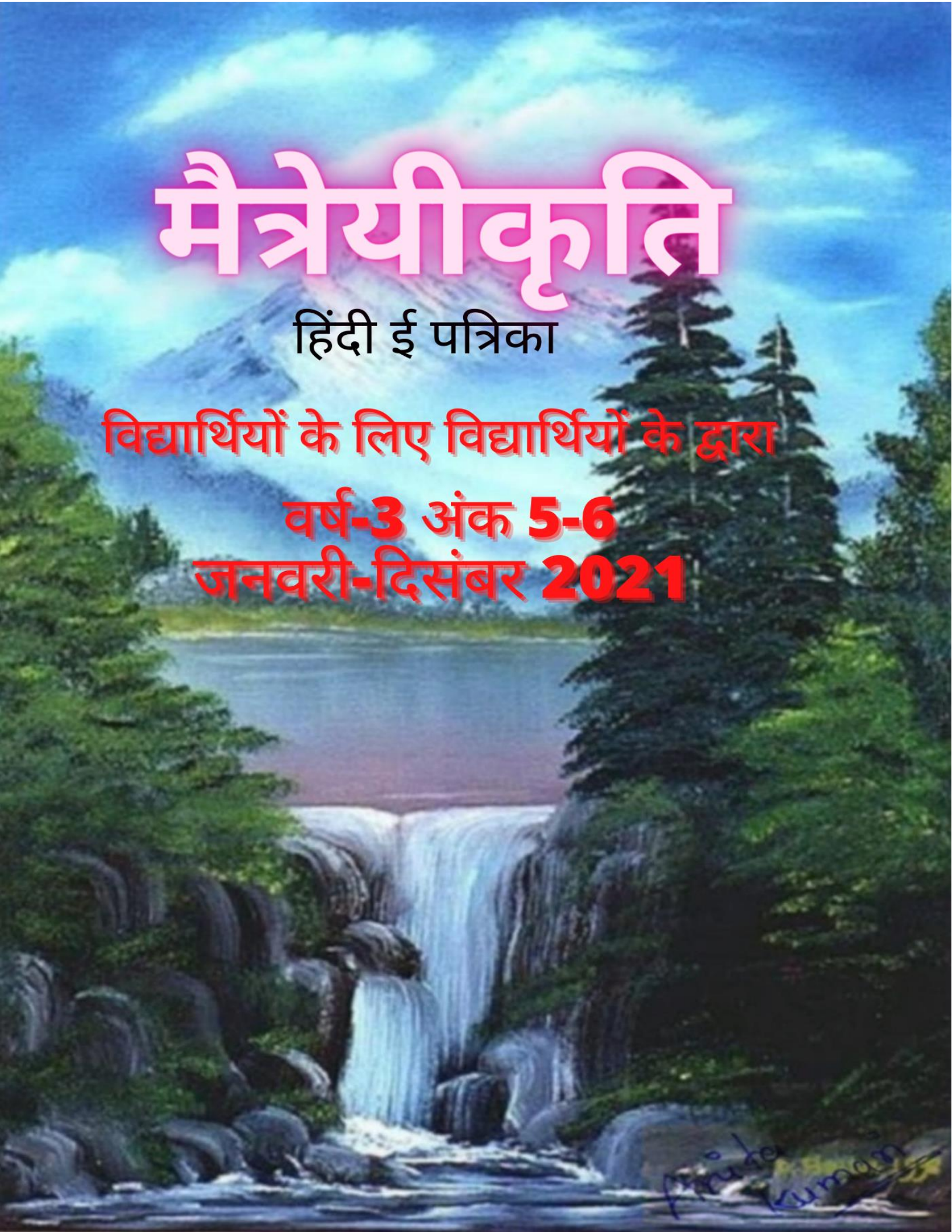
मैत्रेयीकृति
हिंदी ई पत्रिका
विद्यार्थियों के लिए विद्यार्थियों के द्वारा
वर्ष-3 अंक 5-6
जनवरी-दिसंबर 2021

मैत्रेयीकृति (हिंदी ई पत्रिका)

मैत्रेयी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

NAAC द्वारा ए ग्रेड प्राप्त

डॉ हरित्मा चोपड़ा

डॉ पुष्पा गुप्ता

अनीता

अंकिता

मोनिका

आस्था

मोनिका मिश्रा

संरक्षण एवं परामर्श चयन एवं टंकण

डॉ हरित्मा चोपड़ा
प्राचार्या

संपादन

डॉ पुष्पा गुप्ता
हिंदी विभाग

आवरण पृष्ठ

अनीता हिंदी विशेष तृतीय वर्ष
अंकिता, मोनिका
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष
आस्था, मोनिका मिश्रा

तकनीकी संपादन

अंकिता, मोनिका
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

शुभकामना संदेश

वर्ष 2021 वैश्विक स्तर पर मनुष्य की जीवनी शक्ति एवं संघर्ष क्षमता के उत्कर्ष का पर्याय बन कर उभरा | पिछले वर्ष शिक्षण संस्थानों से जुड़ी प्रत्येक गतिविधि पूर्णत: ऑनलाइन हो गयी थी, इस नयी व्यवस्था में विद्यार्थियों को पठन-पाठन के साथ रचनात्मकता से जोड़े रखने के लिए बहुस्तरीय प्रयास किए गए| मुझे खुशी है कि इस प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयों को चुनौती की तरह स्वीकारते हुए विद्यार्थियों ने अपनी अभिव्यक्ति को सक्रिय बनाए रखा| भविष्य में भी यह ऊर्जा इसी तरह क्रियाशील रहे , ऐसी मेरी शुभकामना है|

डॉ. हरित्मा चोपड़ा

कार्यवाहक प्राचार्या

संपादकीय

अपने आने वाले कल के लिए सुखद भविष्य की कामना और दूरगामी योजनाओं की संकल्पना मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है; लेकिन समय रूपी रथ के पहिए किस ओर मुड़ेंगे,यह निश्चित नहीं होता| ऐसा ही 2021 में आई कोरोना की दूसरी लहर के संदर्भ में कहा जा सकता है, जिसने संसार भर में मनुष्य के जीवन को गहराई से प्रभावित किया| विकासवाद का सिद्धांत कहता है कि सभी परिस्थितियों में परिवेश के साथ अनुकूलन की क्षमता मनुष्य को प्रकृति ने ही प्रदान की है| इसलिए सदैव यह पाया जाता है कि समाज की कठिनतम परिस्थितियों में ही मानवता अपने सर्वाधिक सकारात्मक रूप में सामने आती है| “साथी हाथ बढ़ाना”- इस पुकार को सुनकर बनने वाली सहयोग की मानव-श्रृंखला अंततः चुनौतियों की सुरंग के अंत में रोशनी की तलाश करने में सफल होती है| पिछले वर्ष तकनीक की शक्ति ने पठन-पाठन की ऑनलाइन कार्य-पद्धति का सूत्रपात कर दिया था| अतः आभासी संवाद के द्वारा पढ़ाई के साथ-साथ अन्य स्तरों पर भी विद्यार्थियों को निरंतर प्रोत्साहित किया गया, इसने उनकी रचनात्मकता को सक्रिय बने रहने में सहायता की| पत्रिका के इस अंक में संकलित साहित्यिक रचनाओं में कोरोना और उत्तर-कोरोना अनुभवों की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है तथा सामयिक विषय भी रचनाकारों की दृष्टि-सीमा में आए हैं| इस के साथ ही विद्यार्थियों की मन:स्थिति का परिचय देते रंग चित्र हैं तो कैमरे की आंख से कॉलेज परिसर को दिखाते छायाचित्र भी हैं|

उथल-पुथल के इस दौर में विभाग की सहमति से पत्रिका का यह अंक संयुक्त(5-6) कर दिया गया है| सभी परिस्थितियों का संज्ञान लेते हुए आप अंक को आने में हुई देरी के कारण को समझ सकेंगे, परंतु भविष्य में आने वाले अंक को समय पर लाने का यथासंभव प्रयास किया जाएगा|

पत्रिका का यह संयुक्तांक (5-6) आप सबको सौंपने से पहले मैं प्राचार्या डॉ. हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ क्योंकि प्रत्येक स्थिति में उनकी सहृदयता और मार्गदर्शन ही पत्रिका का जीवनाधार रहा है। विभाग तो प्रत्येक स्थिति में धन्यवाद का अधिकारी है ही। अंत में पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में संबंद्ध विद्यार्थियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके कारण पत्रिका का यह अंक रूपाकार पा सका|

डॉ. पुष्पा गुप्ता

हिंदी विभाग

छात्र संपादकीय

जब भी मैं अपने स्कूल की या अन्य किसी पत्रिका को पढ़ती थी, तब मेरे मन में पत्रिका से संबंधित प्रश्न जिज्ञासा के रूप में सामने रहते थे कि यह रचना कैसे रची गयी होगी? किस प्रकार इसमें विषयों का चुनाव किया जाता होगा तथा इसकी रचना के दौरान किन-किन समस्याओं से जूझना पड़ता होगा? कॉलेज में आने के बाद जब मैं विभाग की ई पत्रिका "मैत्रेयीकृति" के साथ जुड़ी तब अपने तमाम प्रश्नों के उत्तर मुझे मिल गए| इस प्रक्रिया में मैंने यह जाना कि एक पत्रिका के आकार ग्रहण करने में केवल व्यक्ति विशेष का ही योगदान न होकर संपूर्ण समूह का सहयोग और सहभागिता होती है। पत्रिका के माध्यम से मुझे यह अनुभव हुआ कि किस प्रकार समूह मिलजुल कर काम करते हैं और व्यवस्थित रूप से किसी कार्य को करते समय उस में आने वाली छोटी-छोटी समस्याओं को कैसे आसानी से सुलझाया जा सकता है। मैंने यह भी जाना कि पत्रिका को आकार देना एक रचनात्मक प्रक्रिया है जिसे अनुशासनबद्ध और उत्तरदायित्वपूर्ण तरीके से पूरा किया जाता है।

आस्था
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

साहित्य

1	बचपन	पायल	2
2	कोरोना कविता	नीलम	2
3	कोरोना से टूटते सपने	मीनाक्षी	3
4	अधूरे सपने	नीलम	4
5	क्यों सुरक्षित नहीं नारी	पायल	5
6	माता-पिता	शैली सिंघल	5
7	पुरानी यादें	गरिमा सिंह	6
8	जिंदगी में बहुत कुछ बाकी है	रीमा बिस्वास	7
9	सपना: आत्मनिर्भर भारत	रीमा बिस्वास	7
10	ना जाने कहां गए	पायल	8
11	हमारी हिंदी	रीमा बिस्वास	8
12	वह चला गया	मोना कुमारी	9
13	सुनहरे सपने	जयश्री	10
14	मां	गौरांशी जैसवाल	10
15	वक्त	विधि जुनेजा	11
16	दिल की बातें	राजश्री	11
17	सफरनामा	सपना कुमारी	12
18	बचपन की दोस्ती	हितैषी गोयल	13
19	मन जो कहे	स्तुति शर्मा	13
20	पिंजरे का पंछी	शैवीपुलक श्रीवास्तव	14
21	किसानों की कहानी	प्रिया	15
22	रिश्ते	श्वेता मिश्रा	16
23	बेटियां	राजश्री	16
24	कौन है वह	ई हर्षिता	17
25	आत्मनिर्भर भारत हमारा	सोनू कुमारी	18
26	सीख लो	राशि दहिया	18
27	नारी	राजश्री	19
28	आत्मनिर्भर भारत	बिनीता	20
29	चाहतें	स्तुति शर्मा	21
30	क्या लिखूं	बिनीता	21

31	मेरा प्यारा गांव	राजश्री	22
32	ठंड का मौसम, मां और मैं	निकिता कंवर	22
33	वर्ष 2020 और हम	मीनाक्षी	23
34	कैसा चला कोरोना काल	नंदनी वर्मा	23
35	मुझे कुछ कहना है	सोनू कुमारी	24
36	दूसरी मां: बड़ी बहन	सोनू कुमारी	24-25
37	जन्मशताब्दी वर्ष : फणीश्वर नाथ रेणु		26
38	वह 2020	यशिका सहाय	27
39	अज्ञानता	श्रेया शर्मा	28
40	संघर्ष ही जीवन है	रीषिका देशवाल	28-29
41	सुकून की खामोशी	अर्शिल अमीर	29
42	भारत के अन्नदाता किसान	मनीषा लोहिया	30
43	समानता का अधिकार	सिम्मी नयन	31
44	कलयुग	वंशिका साहू	31
45	नशा	शैली सिंघल	32
46	मां की सीख	ईशिता	32
47	डायरी मां और बेटी की	सौम्यता कटियार	33-34
48	डिजिटल इंडिया और हिंदी	अदिति आनंद	34
49	स्वच्छ पर्यावरण:ss स्वस्थ देश	अंशिका जैन	35
50	महिला सशक्तिकरण	सिया ठाकुर	36
51	गरीबी	सोनू कुमारी	36-37
52	लॉकडाउन	वंशिता बिश्नोई	37-38
53	जन्म शताब्दी वर्ष: अमृतराय		38

रंग संयोजन

54	आईना	शिप्रा तिवारी	40
55	पूजा चौकी	प्रतीक्षा बृजवासी	41
56	कार्तिकेय और लक्ष्मी पादुका	प्रतीक्षा बृजवासी	42
57	विनायक	प्रतीक्षा बृजवासी	43
58	नृत्य मुद्रा	प्रीति मिश्रा	44
59	पेड़ की छांव तले	हिमांशी कोली	45
60	साथ चलते हुए	हिमांशी कोली	46
61	तेरा मेरा साथ	हिमांशी कोली	47

62	मां	सिलविया नोन्गबोथम	48
63	रंग बिरंगी	मुस्कान	49
64	नादान परिंदे	महिमा शर्मा	50
65	मां की गोद	पवनप्रीत कौर	51
66	राष्ट्रीय पक्षी	नंदनी वर्मा	52
67	अपरिभाषित संसार	तेजस्विनी बैंडा	53
68	रहस्यमयी अंधेरा	नंदनी वर्मा	54

कैमरा और कॉलेज परिसर

69	नीला आकाश	मनीषा	56
70	खुलती खिड़की	विसिनो दिली	57
71	खुला मंच	विसिनो दिली	58
72	बास्केटबॉल कोर्ट	विसिनो दिली	59
73	बड़े पत्ते और आसमान	आस्था	60
74	गहरा नीला आसमान	आस्था	61
75	प्रतिच्छाया	आस्था	62

साहित्य

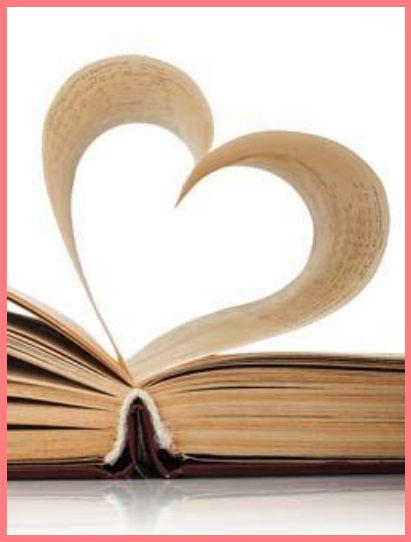

बचपन

कामों से थककर
जब मैं कुछ पल के
लिए बैठा,
करवट ली यादों ने मेरी
जान पड़ा कुछ ऐसा
पहुंच गया मैं
फिर बचपन में,
पनघट के उस झूले पर
जहां पर खेला करते थे
हम सब मिलकर हर पहर
ना कोई बहाना था,
ना ही कोई फिकर,
ना कोई चिंता थी,
ना ही उसका ज़िक्र|
बचपन के वो गीत गाना
जैसे मुट्ठी में था
सारा जमाना।
दादी की
परियों की कहानी,
झटपट आती थी
निंदिया रानी।
जाने कहां खो गया
वो जमाना
था जिनमें खुशियों का खजाना।

पायल
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

कोरोना कविता

कोरोना की आन देखो,
बढ़ती इसकी
शान देखो,
करे परेशान देखो,
है कितना शैतान देखो,
कोई भी इससे
बच ना पाए
जो इसके आगे आ जाए|
दो गज़ की
दूरी जो बनाए
कोरोना से वो बच जाए|
बूढ़े-बच्चों से
मिलना चाहे,
इसलिए घर से
बाहर न जाएं|
ख़ाँसी -ज़ुकाम
इसके लक्षण हैं बताएं,
तो जब भी ऐसा होता पाएं,
अस्पताल में जाँच कराएं|
मास्क, सेनिटाइज़र
जो भी अपनाए,
कोरोना से वो बच जाए|

नीलम
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

कोरोना से टूटते सपने

कोरोना
जब से आया है,
अपने साथ एक
नयी विपत्ति लाया है,
इस कोरोना को
किसने बुलाया है?
इसने तो
सबके सपनों पर
लॉकडाउन लगाया है|
ये दुनिया हो गयी सूनी
कोरोना के कारण,
टूट गये सबके सपने,
बिछड़ गये सब अपने,
सोचा था इस साल
होगी तरक्की
मिलेगी सपनों की हस्ती,
लेकिन आ गयी
कोरोना की विपत्ति
लोगों को लोगों से
दूर कर दिया,
सपनों को भी इसने
चूर-चूर कर दिया
भविष्य में क्या करना है
इसका किया था विचार|
कोरोना के कारण
सब कुछ हुआ बेकार,
किसी ने ना सोचा था
यह पल भी आयेगा,
सबको घर में कैद कर
मुँह पर मास्क लगायेगा,
बच्चों का स्कूल, कॉलेज
सब बंद हो गया,
जैसे उनके सपनो को
विराम मिल गया|
सब कुछ उदास हो गया,
देश का भविष्य
निराश हो गया
पड़ोसी-पड़ोसी से
नहीं मिलता,
कहता है,
कोरोना हो जायेगा
इसलिए अपने ही
घर में कैद हो गया है|
माता- पिता
सब परेशान हैं,
कोरोना ने किया
कैसा प्रहार है
सपनों का यह संसार
नष्ट हो रहा है,
रिश्तों से नाता
छूट रहा है,
सपनों से बंधन
टूट रहा है,
कोरोना
एक-एक कर
सबके सपनों को
तोड़ रहा है|

मीनाक्षी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

अधूरे सपने

समय कहां कभी
कुछ बताकर आता है,
व्यक्ति प्रतिक्षण
अलग परिस्थितियों में
खुद को पाता है |
जो विचार में न आए,
ऐसा वृतांत
घटित हो जाता है|
मनुष्य अपनी ही
वेदनाओं से क्या
बाहर निकल पाता है?
माघ का महीना,
उत्सुकता मन में लिए हुए,
न जानें कितने ही ख्वाब
नए वर्ष के लिए
मैंने बुन लिए|
फाल्गुन की होली मनाऊं
मैं अपने परिवार के संग,
चैत्र में अपने
पहाड़ जाकर चढ़ेगा
कुछ अनोखा ही रंग,
सपनों में मिल रही थी
उनसे खास हैं जो चेहरे,
मगर चैत्र ने जाते-जाते
मेरी प्रसन्नता पर
लगा दिए कड़े पहरे,
कोरोना के फैलाव को
रोकने के लिए
जनता कर्फ्यू लगाया गया,
जब उससे नहीं बनी बात
तो लॉकडॉउन को
दूसरा हल बताया गया,
अत्यंत पसंद आ रहा था
परिवार के साथ समय बिताना,
प्रतिदिन आराध्य को
नए पकवान का भोग लगाना,
धीरे-धीरे इन खुशियों ने
बना लिया अलग सा बहाना,
और मानों इनको
अब मुझसे दूर है जाना
परिस्थितियों को बिगड़ने में
कहां लगता है समय,
जहां आय का साधन नहीं
प्रतिदिन बढ़ने लगे व्यय,
घर में वस्तुओं का
अब होने लगा अभाव,
बच्चो को बताकर
परेशान न करने वाला
मेरी माता का स्वभाव|
समय भी बीत गया
केवल भाव मन में रह गए |
कल तक जो चेहरे खास थे,
वे समय के वेग में बह गए
ज़रूरत के समय
अपनों ने मुंह मोड़ लिया|
तो मैंने अपने
सपनों को ही तोड़ दिया|

नीलम
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

क्यों सुरक्षित नहीं नारी

क्यों सुरक्षित नहीं
अपने ही घर में नारी,
कब तक उसके साथ
रहेगी ये लाचारी।
क्या भूल गए है
सब नारी का सम्मान,
हवस के आगे
क्या कुछ नहीं है
नारी का स्वाभिमान।
आज नारी पर
ऐसा अत्याचार क्यों?
उसकी ज़िन्दगी के साथ
ऐसा व्यापार क्यों?
दुख होता है जब
ख़बर आती है
नारी के साथ दुर्व्यवहार की
क्यों होता है?
उनका गलत इस्तेमाल
और उन पर अत्याचार।
उस अत्याचार के लिए
उसे ही दोषी
ठहराता है समाज,
हर व्यक्ति
नारी पर ही उंगली उठाता है।
और कब तक
उसके साथ रहेगी
ये लाचारी
क्यों सुरक्षित नहीं
अपने ही घर में नारी

पायल
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

माता –पिता

माता -पिता हैं
तो जहां है,
वो नहीं तो
कुछ नहीं
माता- पिता हैं
हमारी ताकत
वो नहीं तो
हमारी ताकत कुछ नहीं,
माता- पिता हैं तो
हमारे पास पूरी दुनिया है
वो ना हो तो
ये दुनिया भी हमारे लिए
कुछ नहीं,
माता पिता हैं
तो हम है
वे नहीं तो
हम कुछ नहीं।

शैली सिंघल
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

पुरानी यादें

आज समय से कुछ
पीछे आया हूं,
पुरानी यादों का
पिटारा साथ लाया हूं,
भविष्य की चिंता
कहीं पीछे छोड़
भूतकाल में
लौट आया हूं|
ना जाने कौन से
पल याद आते हैं,
ना सवेरे जागने देते हैं,
ना रात्रि में सोने देते हैं,
यूँ लगता है जैसे
काँटों पर चलकर
आया हूं|
झरने की तरह
बहती यादों को
बांध लगाकर कोई
रोक गया है,
गिरने से तो
बचा लाया हूं,
फिर टूटते ही
हजारों टुकड़े
बचा पाया हूं|
क्या कहना है
उस अनजान को
जब अपनों ने ही
दिल तोड़ा है,
हवा ने कुछ यूं रुख
बदला है जहां,
मिला था सुकून
वहीं जला हुआ पाया हूं
मन में मैं
यूं ही मुस्कुराता हूं,
अपने अंदर न जाने
कितने दर्द छुपाता हूं|
पक्षी का
यूं चहचहाना भी
मेरी यादों को
बहका ना पाया
ना जाने कैसी
उलझन में फंस जाता हूं|
इन यादों को भूल
मैं वर्तमान में आता हूं,
ना जाने क्यों
फिर सुबह खुद को
इन यादों में गिरा हुआ
पाता हूं|

गरिमा सिंह
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

ज़िन्दगी में बहुत कुछ बाक़ी है

ज़िंदगी में देखा
बहुत कुछ है
और बहुत
अब भी बाकी है।
सूखी आँखों में
आँसू कई देखे
ठहरे होठों पर
हँसी कोई बाक़ी है।
पत्थर चीरती नदियां देखी
गहरे समंदर
अब भी बाकी है।
बाकी है कदम
मंज़िल से पहले कई,
ज़िंदगी में अब भी
बहुत कुछ बाक़ी है।
कागज़ की कश्ती है,
पार करना वह दरिया
पूरा बाक़ी है।
अभी तो सिर्फ़
शुरूआत ही की है,
उस पर जाना
अभी बाक़ी है।
अभी भी हैं कई
ख्वाहिशें और
दिल में अरमान
कई बाक़ी हैं,
बहुत कुछ देखा हैं
ज़िंदगी में अब तक
पर अब भी
बहुत कुछ बाक़ी है।

रीमा बिस्वास
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

सपना: आत्मनिर्भर भारत

सपना है बनाना
आत्मनिर्भर भारत|
विनती तुमसे है
कि भारत को
आगे ले जाना,
ना रहना पड़े
निर्भर किसी पर
इसलिए
अपने संसाधन
उपयोग में लाना,
बिगड़ गयी है
जो अर्थव्यवस्था हमारी
सुधार लेंगे इसे हम
गरीब है देश हमारा
देश बढ़ेआगे ही
बस तुम
भारत के संसाधन
उपयोग में लाओ
हमारी अर्थव्यवस्था
मजबूत बनाओ
भारत
आत्मनिर्भर हो जायेगा |

रीमा बिस्वास
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

ना जाने कहां गए

ना जाने कहां गयीं,
वह रिमझिम सी बूंदें,
वह बारिश का पानी,
वह कागज की कश्ती,
नदियों की धारा,
वह वृक्षों की प्यास,
सागर की लहरें
वह धरती की आस|
न जाने कहां गए
वह सावन के झूले,
वह सखियों के गीत,
वह फूलों की खुशबू,
वह बचपन के मीत|
न जाने कहां गयीं,
वह बादल की गर्जन,
वह कोयल की सरगम,
वह मेंढक की टर्र-टर्र,
वह बारिश की रिमझिम,
ना जाने कहां गयीं,
वह वनों की हरियाली,
वह सूरज की लाली,
पंछी की डाली।
ना जाने कहां.....

पायल
हिन्दी विशेष द्वितीय वर्ष

हमारी हिंदी

हिंदी को
कर रहे हैं लोग
अपने दिलों से अलविदा
क्योंकि अपना ली है
उन्होंने पश्चिमी सभ्यता,
मत करो नजरअंदाज
यूँ हिंदी को
क्योंकि यह है
हमारी मातृभाषा,
जिससे है हमको
अनेकों आशा।
काम करने से पहले
जैसे करते हैं हम विनती,
वैसी ही है
हमारी भाषा हिंदी,
मत बिछड़ने दो
इसे समाज से,
रखो दिल में
एक अंदाज से
जैसे ईश्वर है संसार में
वैसे ही अपनाओ
हिंदी को तुम प्यार से।

रीमा बिस्वास
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

वो चला गया

जिसे जाना था
वो चला गया,
गम तो बेशक हुआ
वह क्यों गया?
उसके साथ क्या हुआ?
यह राज वो
अपने साथ लेकर
चला गया,
ज़िंदगी की
कशमकश
को मिटाकर
मुड़ गया वो
अपनी राह पर
जब वो था,
तब शायद उसकी
ज़िंदगी पर,
उसके गम पर
किसी ने गौर
नहीं किया
लेकिन उसका जाना
आज शहर का
सबसे बड़ा
हादसा बन गया|
वो खुद
रखना चाहता था
कुछ पन्नों को,
बंद अपनी जिदंगी के,
लेकिन उसका
इस तरह गुजर जाना
बहाना बन गया,
उसकी बंद किताब
खोलने का |
वो खुद गया
या फिर उसे
मजबूर किया गया
यह तो नहीं मालूम,
मगर उसका जाना
शहर की
कई गलियों के
राज खोलता
हुआ गया |
उसका कातिल
वो खुद है
या फिर कोई और,
ये तो नहीं पता
मगर उसका जाना
कईयों के लिए,
सनसनीखेज
बन गया|
उसे इन्साफ मिले,
ये मेरी भी तमन्ना है,
लेकिन जाने के बाद
उसके आत्मसम्मान को
और ठेस ना पहुँचे
ये आरजू है|

मोना कुमारी
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

सुनहरे सपने

सुनहरे सपने दिखा,
आत्मविश्वास यह जगाया गया,
आसमान को केवल
कुछ ही दूर
बताया गया।
पुष्प-सा खिलखिलाना
हमें सिखाया गया,
टूट कर भी मुस्कुराना
कर्तव्य हमारा
बताया गया।
समाज से न डर
नयी बुलंदियों को छूना
हमें सिखाया गया,
पापा की परियां बोल
खूब चिढ़ाया गया।
खुद को कभी
कम न समझना
बार बार
हमें बताया गया,
पंख फैला आसमान सी
ऊंचाइयों को छूना
हमें सिखाया गया,
कुछ इस कदर उड़ना
हमें सिखाया गया|

जयश्री
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

माँ

कैसे करुँ पूरी
यह कहानी,
माँ अकेली बस तू है,
मेरे घर की रानी,
तुझे देख लूँ तो
मैं हार कर भी
हारा नहीं होता,
माँ तुझसे ज्यादा
मुझे कोई और
प्यारा नहीं होता,
तूने किया
मेरे लिए बहुत कुछ,
पर कभी जताया नहीं
जानती थी कि यह दुनिया
छोड़ जाएगी एक दिन
इसलिये मुझे दूर
तू सीने से करती नहीं
ख्वाहिशें पूरी करुँगा
एक दिन सारी
अभी बाकी जो-जो है,
माँ मै तेरे जैसी बन जाऊँ
इससे ज्यादा
मैंने क्या चाहा है?

गौरांशी जैसवाल
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

वक्त

यह वक्त भी
कमबख्त है,
न जाने क्यों
सब पर सख्त है,
जीवन की जो
बाधाएं हैं,
इनको पार कर
हम आए हैं,
यह वक्त अब
तेरा इम्तिहान लेगा,
यह यकीन है मेरा
कि तू अब अपनी
सारी जान लगा देगा।
जीवन है,
जो तुम्हारे पास
अनमोल है,
वक्त के खिलौने
हैं, हम सब,
पर सबसे अच्छा खिलौना
न जाने आएगा कब।
वक्त को उसी का इंतजार है
जिसे हर चुनौती
स्वीकार है।

विधि जुनेजा
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

दिल की बातें

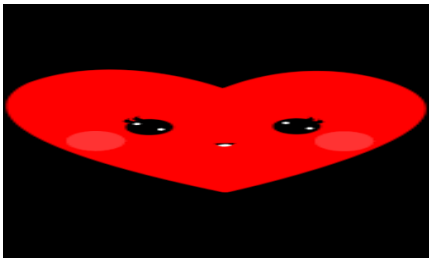

इस दुनिया में कौन
किसे अपना मानता है?
ये तो बस मेरा
दिल ही जानता है,
सब तो
समय का खेल है ।
इस रेत में क्या ढूंढता है
बिना काम के
कौन किसे पूछता है?
फिर अजनबी से
क्यों दूर भागता है?
अन्दर कितना यहां
दर्द छिपा है सब तो
मेरा दिल ही जानता है
अपनों के सिवा
कौन किसे मानता है?
बिना कारण कौन
किसे याद करता है?
सब तो बस
मौके की तलाश में
रहते हैं यहां सब
मेरा दिल ही जानता है|

राजश्री
हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

सफरनामा

जिंदगी की
कहानी का सफर
कहीं से शुरू कीजिए,
किरदार तुम रहोगे
तो मुसाफिर मैं भी,
अभी तो शुरू किया है
इतना उम्दा मैं नहीं,
कभी तुम साथ आओ
और कभी मैं भी
बेशक रास्ते लंबे हों,
मंजिल का पता नहीं
कभी रास्ते में तुम मिलो
और कभी मैं भी
जिंदगी की
कहानी का सफर
कहीं से शुरू कीजिए
किरदार तुम रहोगे
तो मुसाफिर मैं भी।।
मिलना हुआ तो
जरूर मिलेंगे
उन मोड़ों पर
जहाँ तुम भी
मिलना चाहो
और मैं भी,
गर लौट आना
मुमकिन हुआ
तो लौटूंगा जरूर
जब तुम भी
अपने से लगो
और मैं भी,
गुजरते वक्त से
टूट गयी जो
डोर रिश्तों की
मोती उसके
तुम भी पिरोना
और मैं भी|
जिंदगी की
कहानी का सफर
कहीं से शुरू कीजिए
किरदार तुम रहोगे
तो मुसाफिर मैं भी।।
गुमनाम बनकर
रह जाते हैं
मेरे जैसे लोग
कभी तुम अपना कहो
और कभी मैं भी
टूटते देखे हैं
खास रिश्ते हमने
साथ देने का
इक वादा करो
और इक मैं भी
जिंदगी की
कहानी का सफर
कहीं से शुरू कीजिए
किरदार तुम रहोगे
तो मुसाफिर मैं भी।।

सपना कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

बचपन की दोस्ती

दोस्त मिलते तो कई हैं,
इस जिंदगी के सफर में
पर कुछ बचपन की यादें
बनकर रह जाते हैं
तो कुछ उम्रभर
साथ चलते हैं, दोस्ती तो
बचपन में ही सच्ची थी
थोड़ी कच्ची सी।
बेवजह थी, तभी तो अच्छी थी
थोड़ी मासूम सी, प्यारी सी
अनजाने में की हुई
किसी हसीं गलती सी,
दोस्ती तो
बचपन में ही अच्छी थी।
लड़ते थे, झगड़ते थे,
रूठ कर फिर मना लेते थे,
अब जो बड़े हो गए,
इसमें वजह मिल गई
तो लगती है
यह साजिशों सी।
अब तो अगर
कोई रूठ भी जाए,
फिर मनाने के लिए
कोई आगे न आए।
दूर हो जाए,
लेकिन पास आने की फिर
वजह न पाए।
दोस्ती तो
बचपन की ही अच्छी थी,
थोड़ी मासूम, थोड़ी सच्ची थी।

हितैषी गोयल
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

मन जो कहे

ना देखकर सीखा है,
ना समझ कर सीखा है,
यह दुनिया ही कुछ ऐसी है
यहां हर कोई सबक
सीख कर सीखा है।
ना बुझने दे तू
इस दिल की आग को,
जब तक संतुष्टि नहीं मिलती
बस करता जा कर्म,
जब तक मंजिल
नहीं मिलती, कितनी दुखी थे
हम अपने ही दुखों में
पर जब औरों की
समस्याओं को जाना
तब पता चला कि
कितने अमीर थे हम
इन्हीं दुखों की दुनिया में।

स्तुति शर्मा
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

पिंजड़े का पंछी

मैं पंछी चारदीवारी का
क्या मुझमें
उड़ने की आस नहीं?
इस नील गगन की
ऊंचाइयों को छूने की क्या
मुझमें प्यास नहीं?
मैं हरे वृक्ष का प्रेमी हूं,
डाल-डाल उड़ता जाऊं,
इस निराली-सी
दुनिया में खूब बनूं
और इठलाऊं
पर एक क्षण ऐसा आया,
कांप उठी नश्वर काया
मैं उड़ने को बेचैन था,
तब पंख फड़फड़ाए
जाता था, पर देखो,
मैं उड़ ना पाता था।
क्या मैंने
अक्षम्य अपराध किया,
या मेरे पाप भयावह थे,
जो मुझको
बंदी कर डाल दिया?
यह पंख संवारे थे मैंने,
क्या इन्हीं दिनों
की आस थी?
मेरे नीरस से जीवन का,
क्या इंसानों को
आभास नहीं?
मैं पंछी चारदीवारी का,
क्या मुझमें
उड़ने की आस नहीं?
अहा! मेरी यह मौन व्यथा
क्या इसका इंसानों को
आभास नहीं?
यह जग कितना रंगीन है,
मैं बंदीगृह में
क्यों बंद पड़ा?
मैं खुले आसमान
का पंछी,
इस पिंजड़े मैं
क्यों मौन खड़ा?
ओ! मनुष्य
मेरी यह विनती
इसको तुम स्वीकार करो
पंछी आकाश के हैं प्रेमी,
क्या मुझमें मुक्ति की
चाह नहीं
या इसमें तुम्हें
कोई आपत्ति है,
मैं पंछी चारदीवारी का,
क्या
मुझमें उड़ने की आस नहीं?

शैवी पुलक श्रीवास्तव
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

किसानों की कहानी

हमारे किसान
जिन्हें हम
अन्नदाता कहते हैं,
जिनके पास हैं
अनाज के भंडार |
पर खाने को
दाना नहीं,
जिनके आंगन में
दूध बहे,
पर उसने कभी चखा नहीं|
मेहनत ही उनकी ताकत है,
फिर भी वह
आज भिखारी हैं|
वह अनाज का दाता है,
फिर भी
भूखा सोता है|
वह मेहनत की खाता है,
पर प्रगति का गुलाम है|
आस लगाए
वह आसमान निहारे,
लेकिन भाग्य में
उसके शाम है,
साहूकार ने रही सही
छीन ली सांस भी,
कालाबाजारी ने
उसकी जिंदगी
दूभर की,
कर्ज में पैदा होता है,
और कर्ज में ही
मर जाता है |
मां भारती का सच्चा बेटा
कितने दुख सह जाता है |
सब को जीवन
देने वाले के
घर में भी अन्न के लाले हैं
आज हमारा
अन्नदाता ही
नहीं ले पाता
सुकून की सांस
क़र्ज़ में डूबा रहता
पास नहीं है पैसे,
अपने रोटी के टुकड़े को
पैसे वाले कैसे बाटेंगे?
उसके दुखड़े को
आखिर कब तक
नहीं समझेंगे
घास फूस के घर को
कब पक्के में बदलेंगे

प्रिया
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

रिश्ते

आजकल रिश्ते सब
ढोंग हैं, दिखावा है
सच रिश्ते में प्यार
दिख जाता है,
जन्म से, नाते-नाते से
लोग जुड़े हैं
सिर्फ स्वार्थों से,
अपना कह देने से
कोई भी अपना ना बने,
रिश्ता धर्म है, रिश्ता बोझ है
रिश्ता डर है, रिश्ता दर्द है
पर रिश्ता तो
फिर भी संग है,
कब हाथ पकड़कर
अनजान को राह दिखाई,
यह पूछना नाजायज है,
ऐ इंसान तेरा
अपना भी कोई ईमान है,
भटक गया तू
क्या इसी लायक है?
मर्द-औरत, जाति-प्रजाति
इन शब्दों ने
इंसानियत खो दी
सामने कौन है?
यह देख कर
मदद को हाथ उठते हैं,
अपनों ने आंखें नम की
परायों ने आंसू रोके हैं
क्या बताएं हमने भी
क्या क्या दिन देखें हैं?

श्वेता मिश्रा
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

बेटियां

गाते है सभी
लोग यही गान
कि बेटियां
हैं भगवान।।
फिर क्यों लोग करते हैं?
बेटे-बेटियों में भेदभाव।
कहते हैं
लड़कियों को पराई,
फिर भगवान ने
वो क्यों बनाई?
सभी समझें
मेरी लिखी हुई ये बात,
कि बेटियां हैं
खुशियों की बरसात|

राजश्री
तृतीय वर्ष हिन्दी विशेष

कोन है वो?

कोन है वो?
जो तूफान की
तरह आयी है,
और पेड़ की छाया
बनकर रह गयी है।
कोन है वो?
जिसने मेरी जिंदगी में
कदम रखा है जबसे,
किसी भी स्थिति में
मेरा साथ
नहीं छोड़ती है,
हर वक्त
मेरे साथ रहती है,
जो मुझे अकेला
नहीं छोड़ सकती,
मुझे बेहतर से
बेहतरीन बनाया,
समाज में रहने
लायक बनाया,
सभी क्षेत्रों में श्रेष्ठ बनाया,
कोन है वो?
जिसने मुझे
परिवर्तित किया,
कठिनाइयों में जीना सिखाया,
जीवन में आयी
रुकावटों का
सामना करना सिखाया।
जो मेरी ज़िन्दगी का
स्तम्भ बनकर खड़ी है।
मुझे पढ़ाया, मुझे सफल
बनाने के लिए मेरी
अंदर की प्रतिभा को
पहचाना,
आखिरकार कोन है वो?
और कौन हो सकती है?
वह है मेरी प्यारी माँ,
माँ,
एक छोटे से शब्द में
पूरी दुनिया की पहेली
का रहस्य छुपा हैं।
धन्यवाद माँ,
मेरी ज़िन्दगी में आने के लिए
धन्यवाद माँ,
मेरी परछाई
बनने के लिए
धन्यवाद माँ,
मेरी प्रतिभा को
पहचानने के लिए।
धन्यवाद माँ,
रंगो की वर्षा
बरसाने के लिए।
धन्यवाद माँ,
बहुत-बहुत धन्यवाद।

ई.हर्षिता
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

आत्मनिर्भर भारत हमारा

बहुत हुआ
दूसरों पर निर्भर रहना,
अब खुद को आगे बढ़ाना है,
जलने वालों को जलाना है,
भारत को आत्मनिर्भर बनाना है|
भारत के साथ ही जीना,
भारत के साथ मर जाना है|
सबको यह सिखाना है,
भारत को आत्मनिर्भर बनाना है|
हर चीज स्वदेशी हो,
भारत को देशी बनाना है
सदाबहारें आएंगी
भारत को
आत्मनिर्भर बनाएंगी|
देश स्वावलंबी हो जाएगा,
जितनी ठोकर खाएगा
सोने सा निखर जाएगा|
सपनों की कमी नहीं,
आंखों में नमी नहीं,
मेहनत कर दिखलाएंगे,
अपनों को मदद दिलाएंगे,
कामचोर मेरा मुल्क नहीं,
मेहनत पर कोई शुल्क नहीं,
हाथों की मेहनत रंग लाएगी,
भारत को आत्मनिर्भर बनाएगी|
अब यही लक्ष्य है हमारा,
देसी खाना, देसी खिलाना
राह में आने वाली
रूकावटों को दूरकर
भारत को
आत्मनिर्भर बनाना|

सोनू कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

सीख लो

कल तक जो अपना था,
आज वह एक
सपना बनकर रह गया,
उठा जब हाथ अपनों का
तो पता चला
जिसे समझा था अपना,
वह तो पराया निकला
इसलिए कहती हूं
हो सके तो पहले सीखो,
अपने से प्यार करना
क्योंकि सिर्फ
दूसरों की खुशियां
देखने वाले
अक्सर खुद
खुशियों से वंचित हो जाते हैं|

राशि दहिया
बीए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

नारी

नारी है महान,
करते सब यही गुणगान,
फिर क्यों समान अधिकार देने में,
अक्सर निकल जाती है
लोगों की जान।
सतयुग से लेकर कलयुग तक
हर युग में नारी को
केवल परखा गया है|
सीता की अग्निपरीक्षा देने तक,
मर्यादा पुरुषोत्तम ने
मौन रहकर
सारा तमाशा देखा है।
जाने-अनजाने में अक्सर,
स्त्री को जागीर समझा है|
द्रौपदी को चौसर में हार कर,
पांडवों ने पांचाली की
मर्यादा को खोया है ।
दुर्गा, काली, लक्ष्मी बनाकर,
न जाने स्त्री को
कितनी बार पूजा है|
किन्तु उसी नारी को
संस्कारों की बेड़ियों में बांधकर,
समाज ने उसकी
उड़ान को रोका है|
उसे मूर्ति बनाकर
त्याग एवं ममता की,
उसकी इच्छाओं को
दफ़नाया है ।
उसके अस्तित्व को
अनदेखा कर उसे केवल
चूल्हे तक समेटा है ।
पढ़ा-लिखाकर
उसे कार्य स्थल पर
तो भेज दिया,
लेकिन घर वापस आने के
समय को सात बजे की
सुई पर फंसाया,
इस सीमा को लांघने पर
सी सी टी वी
जैसी नजरों से दो-चार कर
अनर्गल प्रश्नों का
जाल बिछाया है
कल और आज में,
भेद सिर्फ इतना है ।
कल एक दुर्योधन-दुःशासन थे,
आज अनगिनत
दुष्टों की सेना है ।
स्त्री के अंतस में
विद्यमान है, वह भय
जिससे रूह भी कांप उठे।
न जाने किस श्रेणी की
बर्बरता हो जाये,
जिससे मर्यादा के आँचल
पर कीचड़ उठे ।
कैसे कहूँ?
इस जग में अच्छाई है,
जब आए दिन
नारी की मर्यादा का
उपहास बनते देखा है ।
कैसे कहूँ?

इस जहाँ में सच्चाई है,
जब सब कुछ
जानने वालों को भी
मौन रहते देखा है।
बर्बरता की सीमाओं को
लांघने वालों को,
उम्र की तनिक परवाह नहीं है,
फिर क्यों दुष्टों को
दंडित करने को,
कानून के हाथ में
नाबालिग नामक बेड़ियां हैं?
न जाने कितनी
मासूम बालिकाओं को,
दिन-दहाड़े समाज
एवं परिवार से छीना है ।
न जाने कितनी
बहू-बेटियों को,
आधी रात में सड़क पर
तड़पते हुए मरने को छोड़ा है|
ना उम्र की ना इंसानियत की
जिन दरिंदों को फ़िक्र है,
उनके लिए इस देश में,
सज़ाए मौत ही मुनासिब है ।
बिना जाने, बिना समझे
चिंता भर से ना कुछ होना है।
क्योंकि वार्तालाप नहीं
अब रण होगा
रचने को ऐसा संसार, जहाँ
अधिकार हमारा सम होगा।

राजश्री
हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

आत्मनिर्भर भारत

हे मानव!
आत्मनिर्भर बन|
निर्भरता की गुलामी को छोड़,
अपना देश तू जोड़।
स्वावलंबी बनने की राह पर
आएंगे कठिन भी मोड़,
विदेशी उत्पादों से
अब नाता तू तोड़।
अपने देश के उद्योगों की
बात है कुछ अलग,
चल दिखाए सबको
इसकी एक झलक।
सुई से लेकर जहाज तक
सब स्वयं तुझे बनाना है,
अर्थव्यवस्था मजबूत कर,
देश को आगे बढ़ाना है।
स्वदेशी वस्तुओं को
फिर उपयोग में लाना है,
अतुल्य मातृभूमि को
विश्व में दर्शाना है।
आत्मनिर्भर भारत का
डंका तुझे बजाना है।

बिनीता
हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष

चाहतें

कुछ करने का
मन है मेरा।
कुछ पाने की
चाह है मुझमें।
हाँ मैं कुछ
करना चाहती हूँ।
जिंदगी में हमेशा
आगे बढ़ना चाहती हूँ।
भरोसे का हाथ थाम,
सही पथ पर
चलना है मुझे।
मंजिल की
फिक्र करे बगैर,
आगे बढ़ना है मुझे।
हाँ मै कुछ
करना चाहती हूँ।
मेहनत से दोस्ती कर,
सफलता पाना चाहती हूँ।
खुश रहकर
ज़िन्दगी जीना चाहती हूँ।
हाँ मै कुछ
करना चाहती हूँ।
ज़िन्दगी में हमेशा
आगे बढ़ना चाहती हूँ।।

स्तुति शर्मा
बी.ए प्रोग्राम (प्रथम वर्ष)

क्या लिखूं?

कॉलेज की मैगजीन
छप रही है,
मुझे मिला यह समाचार।
मैंने सोचा लिख डालू
आर्टिकल दो-चार।
क्या लिखूं, कैसे लिखूं,
समझ कुछ नहीं आता है।
यूं ही बैठे -बैठे
वक्त गुजर जाता है।
कहा सहेली से
कोई विषय बताओ
या सुंदर सा प्रसंग,
सोचा कोई
अनुभव ही लिख डालूं,
या कुछ गमगीन
क्या लिखूं
कुछ समझ नहीं आता,
मैं ठहरी अनुभवहीन।।
इन्हीं विचारों में खोकर,
मैंने तुकबंदी कर डाली
क्या लिखूं, कहते-कहते
पूरी कविता ही लिख डाली।

बिनीता
हिंदी विशेष, प्रथम वर्ष

मेरा प्यारा गांव

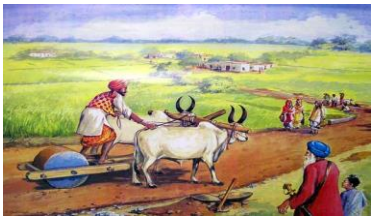

वो जो मेरा गांव हैं,
हां, वही जहां
मीठी नीम की छांव है|
कच्ची सड़के
गलियों के किनारे हैं।
छोटे-छोटे तालाब
नदियों के नज़ारे हैं।
फूलों से सुगंधित तालाब
महकने लगते हैं।
जल में खेल खेलते
बच्चे रोचक लगते हैं।
बुजुर्गों की चौपाल
लग रही है, वहीं हुक्के
में भी आग सुलग रही है,
आंगन में मथानी की
गड़गड़ाहट सुनाई
दे रही है,
दादी के हाथों में मक्खन
और मिश्री इठला रही है,
रसोई घर से स्वादिष्ट
सुगंध आ रही है,
लगता है माँ भी रसीले
व्यंजन पका रही है|
बैलों की घंटी बजने लगी है,
गायें भी बछड़ों को
दुलार करने लगीं हैं,
पिताजी भी हल चलने लगे है,
और खेतों का भी
दामन खिलने लगा है|
गांव के जीवन की भी
कुछ अलग ही खुशी है।

राजश्री
हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

ठंड का मौसम, माँ और मैं

ठंड में गर्म गर्म रजाई,
तूने मुझे अच्छी नींद है सुलाई।
इतने में ही मेरी माँ की
आवाज दी सुनाई,
उठ जा ऑनलाइन क्लास की
घंटी निकट आई।
नहीं उठे तो माँ ने
रजाई खिसकाई,
करके फिर माँ से
प्यारी सी लड़ाई।
उठने लगी तो
एक आवाज दी सुनाई,
फिर से सो जा
यूँ बोल उठी चारपाई।
बेचारी को सांत्वना
देकर हूँ आई,
पढ़ने जाना है तो
सहनी पड़ेगी ये जुदाई।
ठंड में गर्म-गर्म रजाई,
तूने मुझे अच्छी नींद है सुलाई।

निकिता कवर
बी.ए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

वर्ष 2020 और हम

कहते हैं,
नया साल
जब आता है,
हर्ष और उमंग लाता है|
सूर्य का प्रकाश
नया होता है,
वसंत का मौसम
खिल उठता है,
नयी ऊर्जा का
संचार होता है,
सबका जीवन खुशियों
से भर उठता है|
पर जबसे
2020 आया है,
जीवन में एक नया
मोड़ आया है,
हम कहते हैं इस
2020 को किसने बुलाया है,
इस 2020 ने तो
सब कुछ बंद करवाया है,
जीवन में दुःखों का
संचार हुआ है|
घर में सभी
बच्चे हैं उदास
जाने कब होगे स्कूलों में
एक-दूसरे के साथ
कॉलेज खुलने का भी
है इंतजार
जब होगे हम सभी
एक-दूजे के साथ

मीनाक्षी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कैसा चला कोरोना काल

कैसा चला कोरोना काल
कितनों का छीना
जीवन काल
कितनों का
बिखर गया परिवार
हाय-हाय
कर रहा संसार
कैसा चला कोरोना काल
लोगों का मुश्किल हुआ
बाहर निकलना
घुट रहा पूरा संसार
फिर चली एक प्रलय
इस जग में
जूझ रहा पूरा संसार\

नंदिनी वर्मा
बीए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

मुझे कुछ कहना है

कोरोना का यह काल आया,
साथ में अपने तबाही लाया,
लाशों के यहां ढेर लगे हैं,
अपनों को किया अपनों से दूर|
यह समय समझदारी का है
ना करो लोगों से बैर ,
अपने न अपनों के काम आएंगे
तो हम कैसे देश को बचाएंगे?
अब टूटती है सांसों से सांसें|
ना जाने कब वहां हम हों,
क्यों घमंड करना?
दूसरों की मदद करो,
अपनी रक्षा स्वयं करो,
लोग तड़प रहे हैं ऑक्सीजन के लिए,
तुम क्यों बनते हो इसके हकदार?
सारी चीजें बाद में है
पहले करो अपना
और अपनो का उपचार|
मेरा कहना बस इतना है
घर में रहोगे तो सुरक्षित
रहोगे मेरे यार|
अपना रखो पूरा ध्यान,
आसपास के गरीब लोगों का
करो तुम कल्याण,
तभी तो जीतेगा
हमारा भारत हिंदुस्तान|
संकट का यह समय
बीत ही जाएगा,
तब होगी सबके
चेहरे पर मुस्कान,
फिर से होगा अपनों का साथ|
बुझ रहे हैं हर पल दिए,
फिर से इंसानियत का
धर्म निभा लो,
एक बार फिर से
जीतकर दिखा दो,
भगवान तो नहीं तुम
भगवान बनके दिखा दो,
एक दूसरे की मदद करो,
फिर से इंसानियत का प्यार
सब में फैला दो,
अपनों से अपने बिछड़ रहे हैं,
गरीबों के घर उजड़ रहे हैं,
यहां खाने को अन्न नहीं,
वहाँ एक दूसरे को
तुम खिला दो,
करो एक दूसरे की मदद
कोरोना को हरा दो|
कहीं कोई हसरत न रह जाए,
सबको हंसाओ और
जीत कर दिखा दो|
गलतफहमी को मिटा दो,
दिलों को जीत लो,
प्यार दिखा दो,
अपनों को अपनों से मिला दो|
कोरोना महामारी जिसका नाम,
उसे जड़ से निकाल फैंको,
हर दिल का यह ख्वाब
सच करके बता दो,
अपना जीवन तुम
खुद बचा लो|
रह ना जाए कोई कमी

किसी का भला करने में,
हर एक व्यक्ति की
अपनी ही जगह है
हर किसी के जीवन में,
इस सच्चाई को तुम
रुबरु करा दो|,
जब तुम इतना कर जाओगे,
सच कहती हूं
सच्चे इंसान कहलाओगे,
आओ मिलकर साथ दें,
कोरोना को दिल्ली से भगा दें,
रखो तुम पूरा अपना ध्यान,
दो गज की दूरी बहुत है,
न जाने इसने
कितनों की जान ली,
ना जाने कितनों के घर उजड़े,
यह कैसा समय आया है?
कब दूर होगी यह महामारी?
कब हम निकलेंगे
घर से बाहर?
जब बनोगे तुम समझदार,
तो जीतोगे मेरे यार
अपना जीवन खुद बचाओ|
घर में रहो सुरक्षित रहो,
मेरे यार तभी तो बनेगा
हमारा भारत महान|

सोनू कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

दूसरी मां: बड़ी बहन

मुश्किलों में जो साथ दें,
अच्छे बुरे का ज्ञान दें,
सबसे अलग जो प्यार दें,
मां बाप की डांट से
मुझे बचाएँ,
बनके मेरी शिक्षक
विद्या का ज्ञान दें,
अपने सुख को भूल कर
हंसना मुझे सिखा दें,
छोटों को प्यार दिलवाएं,
बड़ों का सम्मान करवाएं,
तेरा-मेरा छोड़ कर
सबको अपना बनाएं,
खुद रुखा-सूखा खाएं,
मुझे पेट भर खिलाएं,
खुद रो कर
मुझे हंसना सिखा दें,
सारा प्रेम मुझ पर लुटा दें,
चोट जब कभी लग जाए
मुझे दोस्त बनके सहारा दें,
हो जाऊँ जब ठीक
भर-भर के बातें सुना दें,
सबकी देख-रेख में
खुद को है भूल जाती,
मेरे हक के लिए
दुनिया से वो लड़ जाती,

प्यार कहते हैं किसे
कोई उससे जाकर
पूछ ले,
घर में जब वो रहती है,
अपने होने का
एहसास कराती है,
उसने हमेशा
प्रेम को ही गले लगाया,
और हमेशा
प्रेम को ही मन में बसाया,
करे जो सबका सम्मान
ऐसा स्वरूप
उसने अपनाया|
इससे ज्यादा क्या लिखूं?

शब्द भी कम पड़ जाएंगे,
मां के बाद
जो नाम मिला बड़ी बहन,
दूसरी मां कहलाई
करती हूं
दिल से आभार
बड़ी बहन ने दिया
मां -बाप का प्यार

सोनू कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

जन्म शताब्दी वर्ष

वह 2020

क्या -क्या नहीं दिखाया इस 2020 में हमें? सबसे पहले कोरोना ने दस्तक दी|यह दौर था जब सभी अपने-अपने जीवन में किसी ना किसी कार्य को लेकर व्यस्त थे, सभी विद्यार्थी अपनी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे थे,हमारे माता-पिता यह सुनिश्चित करने में व्यस्त थे कि हमें किसी भी तरह की तकलीफ ना हो | जो लोग जॉब करते थे वह सब अपने आने वाले प्रोजेक्ट में व्यस्त थेऔर काफी लोग इस साल की शुरूआत एक नए तरीके से करना चाह रहे थे। लेकिन कोरोना आया और धीरे-धीरे कोरोना संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ने लगी| विद्यार्थियों की परीक्षाएं रुक गयीं और फिर देखते ही देखते भारत में लॉकडाउन लग गया| लॉकडाउन लोगों को अस्वीकृत था क्योंकि कोई भी अपनी इस व्यस्त जिंदगी में किसी भी तरह की रुकावट नहीं चाहता था|लोगों को यह समझने में समय लग गया कि अगर उन्हें स्वस्थ रहना है तो उन्हें घर पर ही रहना होगा| फिर भी काफी लोगों ने नियम तोड़े, मना करने पर भी घर से बाहर निकले और कई लोगों ने मास्क लगाने से भी परहेज़ किया| मजे की बात यह है कि हर 21 दिन बाद हमारे प्रधानमंत्री आते और हर बार लॉकडाउन की सीमा बढ़ा देते|लोग उत्साहित होकर उनकी बातें सुनते, मगर लॉकडाउन बढ़ जाना उन्हें पसंद ना आता। लोगों को कोरोना का होना,लॉकडाउन का लगना खटकता रहा| लोगों ने भी इसे सकारात्मक तरीके से लिया| यहां मेरा मतलब है कि लोगों ने अपने घर में ही अपनों के साथ समय बिताया|लॉकडाउन के चलते ही सही मगर लोगों ने खुली सांस ली, आसमान साफ दिखने लगा और रात में लोग तारे देखने लगे| यमुना सहित कई नदियां साफ हो गयीं ।यह साल हर वह बात अपने साथ लेकर आया जिसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की थी| कोरोना का होना सभी के लिए कष्टमय था,लोगों ने अपनों को खोया, अपने सपनों को बिखरते हुए देखा |कई लोगों की नौकरियां चली गयीं, जिससे उनका जीवन एक चुनौती बन गया। यह साल सिर्फ कोरोना ही नहीं बल्कि काफी ऐसी बातें भी हमारे सामने लाया जिसे परखने के बाद हम मनुष्यों को प्रकृति का एक गहरा संदेश दे सकते हैं|आंधी तूफान का आना, बिजली गिरना , बाढ़ आ जाना,मौसम का कभी भी असामान्य हो जाना,जंगलों में आग लग जाना यह कोई छोटी बात नहीं है | इसे हमें नकारना नहीं चाहिए। यह प्रकृति का संदेश हमें समझना चाहिये जो चीख-चीख कर धरती को बचाने के लिए कह रहा है ।शायद इस बात पर गौर करने का हमारा पास समय नहीं था क्योंकि हम सभी 2020 को 2020 होने के लिए कोस रहे थे। जैसे-जैसे यह साल बीतता गया, लोगों ने इसे खूब दिल और जान से कोसा| भले ही यह साल हमारे काफी सपनों को उजाड़ गया मगर सिखा भी बहुत कुछ गया| अब 2021 से हमारी अपेक्षा काफी ज्यादा है क्योंकि हमारे लिए 2020 अकेला काफी दुख दे गया है| आशा करती हूं कि आप सभी का यह नव वर्ष अच्छा बीते।

यशिका सहाय
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

अज्ञानता

अज्ञानता चाहे किसी भी विषय में हो मनुष्य को कभी-कभी बहुत भारी पड़ जाती है। इस कारण मनुष्य अनेक गलतियां भी करता है और उनसे सीख भी लेता है, परंतु कुछ गलतियां ऐसी भी होती है जिन्हें सुधारा भी नहीं जा सकता। कम पढ़े-लिखे लोगों को यह ज्ञान नहीं होता कि स्वास्थ्य खराब होने पर या स्वास्थ्य संबंधी कोई भी परेशानी होने पर उन्हें क्या करना चाहिए । ऐसे में लिया गया गलत कदम लोगों की जान पर भारी पड़ जाता है। शरीर में कोई कष्ट होने पर बिना चिकित्सक की सलाह के स्वयं दवाइयां खा लेना भी कभी-कभी बहुत भारी पड़ जाता है । हम सभी ने अपने जीवन में कुछ ऐसे लोग अवश्य देखें हैं जिन्होंने अपनी स्वास्थ्य संबंधी लापरवाही के कारण अपनी जान गँवा दी| हमारे देश में यह एक बहुत बड़ी समस्या है। लोगों को यह ज्ञान होना अति आवश्यक है कि शरीर में कष्ट होने पर उन्हें बिना चिकित्सक की सलाह के किसी भी प्रकार का उपचार नहीं लेना चाहिए। छोटी-मोटी परेशानी होने पर सिर्फ वही इलाज करना चाहिए जिसकी हमें पूर्ण ज्ञान है।

श्रेया शर्मा
बी. ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

संघर्ष ही जीवन है

हम सब सदियों से सुनते आ रहे हैं और जानते भी हैं कि मनुष्य का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है| तमाम संघर्षों से गुजरते हुए कुछ नया कर सकें तभी जीवन सफल होता है| संघर्ष तो सभी के जीवन में आते हैं बस फर्क यह है कि कोई उन संघर्षों से मुकाबला करते हुए अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ता ही रहता हैं और कुछ लोग हार मानकर रुक जाते हैं | हम सबने न जाने कितने लोगों के साक्षात्कार सुने हैं कि वह सफल कैसे हुए? परंतु हम कभी उनके बातों के बारे में नहीं सोचते जिससे कि हम भी जीवन में आने वाले संघर्ष का सामना कर सकें | हम सबके जीवन में एक ऐसा समय जरूर आता है जब हमारा संघर्ष एकदम चरम पर होता हैं, लेकिन जैसा हम चाहते हैं वैसा परिणाम नहीं मिलता तो समझ नहीं आता कि अब क्या करें? ऐसे समय में लिया गया निर्णय ही महान व्यक्ति को एक साधारण व्यक्ति से अलग करता है| जब संघर्ष एकदम चरम पर होता हैं तब दो रास्ते होते हैं या तो वहां से यू-टर्न ले लिया जाए या फिर उन संघर्षों का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ा जाए| जितने भी सफल एवं प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं वह कभी अपना लक्ष्य नहीं बदलते| असफलता की स्थिति

में वह अपनी सोच बदलते है| मैं इस बात को थॉमस एडिसन के उदाहरण द्वारा स्पष्ट करना चाहूंगी, उन्होंने 1000 बार कोशिश करने के बाद बल्ब का आविष्कार किया। ऐसी स्थिति में एक सामान्य व्यक्ति हार मान सकता था, लेकिन उन्होंने प्रयास नहीं छोड़ा और नकारात्मक विचारों को छोड़ कर आगे बढ़ते रहे| जब साक्षात्कार में उनसे पूछा गया कि आपको एक हजार बार असफल होकर कैसा लगा? तो वह बोले कि मैं एक हजार बार असफल नहीं हुआ हूं , मैंने तो 1000 तरीके भी ढूंढ लिए हैं जिनसे बल्ब नहीं बन सकता।

रीषिका देशवाल
बी.ए प्रोग्राम प्रथम वर्ष

सुकून की ख़ामोशी

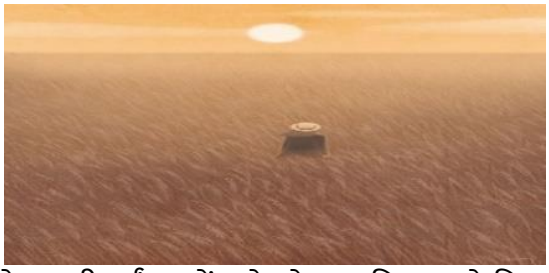

अगर आपको ख़ुद से डर नहीं लगता मेरे दोस्त तो शायद आप ख़ुद को ठीक से जानते ही नहीं? वो पेट में चुभन, वो सांसों में घुटन, वो ज़ुबान का लड़खड़ाना, वो हलक का सूख जाना, वो हाथ-पैरों का थमना, वो आंखों का झपकना वो सहमी हुईं पलकें, वो परेशान दिमाग़ वो फिर दिल का हार जाना |आप ब्रह्माण्ड के रहस्यों को सुलझाना चाहते हैं किंतु आपके अंदर जो अनेक सूर्य उदय होकर अस्त होते रहते हैं आप उनसे अनभिज्ञ हैं|क्या ये अंत है या एक बड़े अनंत का उदय? क्या आप अपने जीवन के हर ज्वालामुखी को गले लगाते हैं और अपने अंदर ही फटने देते हैं । लहू तो बहुत बहता है आपका, फिर भी ना जाने क्यों आप इसे अपनी उपलब्धि समझते हैं| जैसे चुपचाप रहकर अपने आप पर और अपने दिल के टुकडों पर एहसान कर रहे हों ।पर एक बात तो सुनते जाइए, इन छोटे-छोटे ज्वालामुखियों से आप खौलते हुए लावा का एक उग्र समुद्र तैयार कर रहे हैं जो एक ना एक दिन अपनी शान्ति त्यागेगा ज़रूर| मैं ख़ुद को सोचने से रोक नहीं पाती कि तब आप कैसे बचाएंगे, अपनी बेबस आत्मा को| जब पता है आप उठेंगे बार-बार, सिर्फ दोबारा गिरने के लिए| तो फिर आख़िर आप सोचिए तो सही एक बार उस उठने के बारे में, जिसमें फिर गिरना ना हो, ना उग्र लाली हो, ना दहकता लावा हो । सिर्फ एक सुरमई सा क्षितिज हो, छोटे-छोटे तारों की चादर ओढ़े हुए!सोचिए तो उस दिल को सुकून देने वाली ख़ामोशी के बारे में|

सोचिए तो, बस एक बार ।

सोचिए ना |

अर्शिल अमीर
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

भारत के अन्नदाता किसान

भारत एक कृषिप्रधान देश है; जहां लगभग 70% भारतीय किसान है, इसलिए भारत में किसानों को बहुत महत्व दिया जाता है। किसान भारत देश की रीढ़ की हड्डी के समान हैं । किसान एक देश का वह हिस्सा होता है जो वहां की जनसंख्या का भरण-पोषण करता है, किसान ही एकमात्र ऐसा सहारा है जो देश की जनता तक खाद्य सामग्री पहुंचाने में समर्थ होते हैं|,जब किसानों की फसलें भरपूर होती हैं तो उनमें खुशी की लहर देखने को मिलती है।जिससे उन्हें खुद पर किसान होने का गर्व होता है। किसान देश की जनता का भरण-पोषण करने के लिए बहुत अधिक मेहनत करते हैं |ग्रीष्म ऋतु हो या शीत ऋतु हर एक मौसम में खेती करने के लिए तत्पर रहते हैं|वह फसलों की सुरक्षा करने के लिए कीटनाशकों, फर्टिलाइजर आदि का उपयोग करते हैं ताकि फसल खराब न हो और भरपूर मात्रा में फसल उपलब्ध हो सके, जिससे अपने देश की जनता के साथ-साथ विदेशी जनता का पेट भी भरा जा सके| यदि हम किसानों की जीवनशैली की बात करें तो उन्हें खेती करने के लिए बहुत अधिक मेहनत करनी पड़ती है| मशीनी उपकरण उपलब्ध न होने पर हाथ, हल,बैल आदि का इस्तेमाल कर फसलों को बोने व समेटने के लिए करना पडता हैं। फसल को साफ करना, कीड़े न लगने देना इन सभी बातों का ध्यान रखना पड़ता है|कई बार तो उन्हें खेती करने के लिए कर्ज भी लेना पड़ता है| फसल अच्छी न होने पर वह कर्ज़ में डूब जाते हैं, जिस कारण वह अपनी जमीन को भी खो देते हैं |इन सबके साथ-साथ प्राकृतिक आपदाएं आने के कारण भी फसलें बर्बाद हो जाती हैं । इतनी सारी मुश्किलों के बाद भी कृषि करना नहीं छोड़ते| कृषि करना उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है| इन सब परेशानियों से हार मान कर कई बार किसान "आत्महत्या" जैसे कदम उठा लेते हैं और अपने परिवार को बेसहारा छोड़ देते हैं। दुनिया का चाहे कोई भी देश हो विकसित या विकासशील या गरीब। हर देश का महत्वपूर्ण हिस्सा किसान ही होता हैं, जिनके ऊपर पूरे देश की अर्थव्यवस्था निर्भर रहती है| भारत एक ऐसा देश है जहां साल में तीन बार जलवायु परिवर्तन होता है| साथ ही साथ किसान भिन्न- भिन्न प्रकार की खेती करते हैं| भारतीय किसान अपनी मेहनत से देश की अर्थव्यवस्था को भी सुनिश्चित करने में सक्षम हैं और 17% योगदान देश को देते हैं। जिससे अर्थव्यवस्था भी अच्छी होती है। भारतीय किसान वह समुदाय है जो अनेक परेशानियों के बावजूद भी अपना पेशा नहीं छोड़ता और अपना जीवन आत्मनिर्भर बनाने की प्रयास में लगा रहता है। वह देश को भी आत्मनिर्भर बनाने में समर्थ रहा है इसलिए भारतीय किसान सारी दुनिया के सामने एक मिसाल के रूप में आते हैं।
जय हिंद| जय जवान-जय किसान|

मनीषा लोहिया
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

समानता का अधिकार

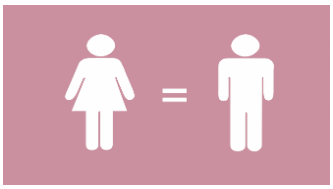

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 और अनुच्छेद 15 के अनुसार "राज्य किसी नागरिक के खिलाफ सिर्फ धर्म ,मूल,वंश, जाति ,लिंग, जन्मस्थान या इसमें से किसी के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करेगा। अनुच्छेद 19 एवं अनुच्छेद 21 में भी कई विषयों पर समानता को केवल धर्म, जाति की दृष्टि से देखते है। परंतु असमानता केवल सामाजिक स्तर पर नहीं अपितु आर्थिक स्तर पर भी होती है। संविधान द्वारा अधिकार दिए जाने के बाद भी हम पूर्णतया समानता के स्तर पर नहीं पहुंच पाए हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवनगत अधिकारों के अंतर्गत प्राकृतिक एवं मौलिक साधनों तक समान पहुंच का अधिकार है परंतु यदि वास्तविकता में देखें तो हमारे समाज का एक मुख्य भाग इस अधिकार तक पहुंच नहीं पाया है| लेकिन इस संदर्भ में अनुक्रम पद्धति को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता| यदि अनुक्रम पद्धति की जड़ें उखड़ जाएं तो अन्य कई प्रकार की असमानताओं को दूर करना कुछ हद तक सरल हो जाएगा। सरकार अपनी तरफ से 'आरक्षण' जैसे कदम उठाकर इस पद्धति को समाप्त करने की पूरी कोशिश कर रही है, परंतु यह तब तक संभव नहीं है जब तक हम अपने ह्रदय से इस असमानता को दूर नहीं करेंगें । हमें याद रखना चाहिए कि प्रकृति ने समाज को ऊंचे-नीचे स्तरों में नहीं बांटा है। हम सब प्रकृति की दृष्टि से समान है परंतु मानवीय पद्धतियों की वजह से प्रकृति द्वारा दी गयी मूलभूत सुविधाओं तक भी सभी की पहुंच नहीं है| हमें युवा पीढ़ी होने के नाते अपनी ओर से समाज की सोच में परिवर्तन लाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।

सिम्मी नयन
बी. ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

कलयुग यानि मशीन-युग

अभी हम कलयुग में रह रहे हैं कलयुग के बारे में विष्णु पुराण में लिखा गया है कलयुग 8 फरवरी 3102 ईसा पूर्व मध्य रात्रि से शुरू हो गया था इसके बारे में सूर्य सिद्धांत में लिखा गया है । मैं गहराई से महसूस कर रही हूं कि यह ऐसा युग है जिसमें कोई भी पूरी तरह प्रसन्न नहीं रह सकता | कई बार अचानक से मेरी आंखें नम हो जाती हैं जब मैं देखती हूं कि सुंदर से सुंदर जगहों पर "प्लास्टिक की थैली" फैली है |हर दूसरे दिन सड़क पर दुर्घटना हो रही है |लोग खुशी में तो साथ देते हैं पर दुख में गायब हो जाते हैं। राजनीति के नाम पर कुछ नेता सिर्फ अपनी जेब भर रहे हैं, नौकरी की कमी होने के कारण लोगों की मानसिक हालत खराब हो रही है इत्यादि। पर फिर मैं अपने आप को संभाल लेती हूं। सिर्फ दो बातें कहकर कि दुखी होने के बहुत कारण मिल जायेंगें पर मुझे बस वो खुश रहने का कारण खोजना है।

वंशिका साहू
बी.ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

नशा

एक समय की बात है। एक गांव में एक पति-पत्नी बहुत खुश थे, क्योंकि उनके यहाँ लड़का पैदा हुआ था। वह बड़े ही लाड़-प्यार से अपनी संतान का ख्याल रख रहे थे । एक दिन उस बच्चे के पिता की अकाल मृत्यु को गयी । अब घर में केवल दो ही लोग रहे गए। मां अपने बच्चे की पढ़ाई और उज्ज्वल भविष्य के लिए शहर चली गई| बरसों बाद अब वह लड़का पढ़ाई करने के बाद कुछ काम ढूंढ रहा था। शहर में उसने कुछ अच्छे दोस्त बनाए थे जो समय पर उसकी मदद करते थे। उसकी मां की तबियत अच्छी नहीं रहती थी। तो वह माँ के पास भी थोड़ी देर बैठा करते थे। धीरे-धीरे काम की खोज में उसे कुछ ऐसे लोग मिले जो ठीक नहीं थे। वह भी उन लोगों की दोस्ती पसंद करने लगा , अब उसे अपनी मां की भी फिक्र कम हो गई। एक दिन वह अपनी मां को बिना बताए पार्टी में चला गया | उसकी मां ने उसे अनेक फोन किए, पर उसने फोन नहीं उठाया। नशे की हालत में उसे रातभर होश नहीं था। सुबह जब वह घर पहुंचा तो उसकी मां ने देह त्याग चुकी थी| वह अपनी मां के मृत शरीर को देखकर खूब रोया और यह कसम खाई कि अब से वह नशा कभी नहीं करेगा।नशा एक ऐसी बुराई है जो अपने साथ-साथ करीबी लोगों को भी हानि पहुंचाती है। इसलिए हमें जितना हो सके इस से अपने को दूर रखना चाहिए।

शैली सिंघल
बी ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

मां की सीख

"थिर घर पे सो हरजन प्यारे, सतगुरु तुम्हरे काज सँवारे "-इसका अर्थ है कि थिर माने स्थिर, घर माने मन,अर्थात स्थिर मन वाले जीव (मनुष्य) में सद्गुरु (प्रभु)वास करते हैं ,वह प्रभु के प्यारे माने जाते हैं ईश्वर उनके सभी कार्य सँवारते हैं उन्हें दुख और विपदा से दूर रखते हैं। यह सीख हम सब के जीवन के लिए लाभदायक है। मनुष्य को आज नहीं तो कल यह मानना पड़ेगा कि स्थिर मन से ही वह सफलता के पथ पर अग्रसर होता है| हमारे जीवन में देखें तो पायेंगे कि यदि सुई में धागा डालना है तो सुई को स्थिर रखना आवश्यक है, तभी धागा ड़ालने का काम हो सकता है| यदि हम सुई को हिलाते रहें तो धागा नहीं पिरोया जा सकता। यह भी संभव है कि अस्थिरता के कारण हमें सभी कार्य कठिन लगने लगें और हम हार मानकर उस कार्य को अधूरा छोड़ दें। कार्य पूर्ण करने के लिए यदि मन को स्थिर रखा जाए तो वह सरलता से पूर्ण होगा। इस उदाहरण से हमें सीखने को मिला कि यदि मनुष्य मन की स्थिरता के साथ कार्य करें तो वह अपने लक्ष्य पूर्ण कर पाएगा|

ईशिता
बी.ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

डायरी मां और बेटी की

22 जुलाई, 2020 गुरुवार, 10:00 PM

प्रिय डायरी,

कल मेरा कॉलेज का पहला दिन है। मैंने अपना बैग जमा लिया। हमेशा की तरह नयी जगह जाने में डर तो लग ही रहा है, पर एक अलग सा उत्साह भी है। डर इस बात का कि मेरे दोस्त तो बन सकेंगे ना और उत्साह था अपने नए क्लासमेट्स से मिलने का |मैं भी अजीब हूं कि इस समय मुझे अपनी मम्मी और दोस्तों की याद आ रही है। मैं तो आज तक कभी मम्मी के बिना नहीं रही हूं, पर सच कहूं तो मैं रहना चाहती थी। मुझे आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनना है। दिल्ली आते वक्त एयरपोर्ट पर मां के सामने मेरे आंसू टपक रहे थे जबकि मैने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की थी| जब टिकट लेने जा रही थी तब ऐसा लग रहा था कि कोई घसीट कर दिल्ली ले जा रहा हो। दिल्ली में मेरे कमरे में सिर्फ दो लड़कियां है ,जिन से मैं कल मिली| फिलहाल तो इतना ही पता लगा कि एक तो काफी शांत है और दूसरी खूब मजाक करती है| अचानक से अपनों को छोड़कर अजनबियों के बीच आ जाना, हजम नहीं हो रहा| ऐसा लगता है जैसे सपना देख रही हूं, जिस में सिर्फ मैं हूं| यह सपना बुरा है या अच्छा ? यह तो कुछ दिन बाद ही पता चलेगा। मैं अपनी प्रिय सहेली से भी दूर आ गयी हूं| पहले मैं सारी बातें अपनी मम्मी और सहेली से ही किया करती थी, पर अब तुमसे कर रही हूं डायरी। जब तक कोई और ना मिले तुम ही मेरी सच्ची सहेली हो। फोन में बातें तो होती हैं पर दिल की बातें तो चेहरे के भावों के साथ ही समझ आती हैं | साथ ही मम्मी को अपना डर दिखाकर उन्हें डराना नहीं चाहती। यहां मुझे एक परिवार बनाने में समय लगेगा| घर के लोग तो मेरी चिंता करते थे, यहां सब कुछ मुझे खुद ही करना पड़ेगा। दिल्ली तो राजधानी है; मैं छोटे शहर से आई हूं, यहां मुझे थोड़ा संभल कर रहना पड़ेगा। अब रात हो गयी, मेरे रूममेट्स भी सो गए, मुझे भी सोना पड़ेगा क्योंकि सुबह जल्दी उठना है| मैं कॉलेज के पहले दिन देरी से नहीं पहुंचना चाहती।गुड नाईट मम्मी।

पिहु

22 जुलाई, 2020 गुरुवार, 9:30 PM

प्रिय डायरी

आज से पहले तो कभी घर में इतनी शांति नहीं थी। पहले अगर होती भी थी तो वो सुकून भरी थी; पर अब तो लग रहा है जैसे समय थम गया हो। टी. वी चलता है तब भी शांति ही होती है। खैर धीरे-धीरे आदत पड़ जाएगी। पता नहीं पिहु क्या कर रही होगी? खाना तो खाया होगा ना, अकेला तो नहीं लग रहा होगा उसे? उसके लिए भी यह समय मुश्किल होगा। नयी-नयी जगह, नये लोग, नया वातावरण और दिल्ली में तो प्रदूषण भी बहुत है। विश्व का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर में पढ़ने गयी है । कहीं उसकी तबियत ना खराब हो जाए । सच कहूं तो मेरा मन उसे दिल्ली भेजने का बिल्कुल नहीं था। अभी तो बहुत छोटी है वो, उसे दुनिया की परख

भी नहीं है। अरे! उसे तो खाना भी जबरबस्ती खिलाना पड़ता है। पता नहीं वहां कैसे मैनेज करेगी और साथ ही दिल्ली तो असुरक्षित होने के लिए भी तो मशहूर है। निर्भया कांड के बाद तो जैसे सीने में एक बोझ सा है और वो मन को डरा रहा है । लेकिन मैं ऐसे ही डरती रही तो मेरी बेटी कभी तरक्की नहीं कर पाएगी। मुझे अपना मनोबल मजबूत करना होगा। दिल्ली जाते वक्त दुखी तो वो भी थी। उसकी आंखों में आँसू भी झलक रहे थे, और वह छुपाने की पूरी कोशिश कर रही थी| अब इतनी भी बड़ी नहीं हो गयी है वो कि आँसू छुपा ले बेटी से अलग होने का |दुख तो था पर उसका उत्साह और आत्मविश्वास देख कर दुख और उदासी पर मलहम लग रहा था। पिहु के जाने के बाद अब मेरे दुख-सुख का साथी तुम ही हो मेरी डायरी। अब हम कल मिलते है।गुड नाईट, पिहु

मम्मा

सौम्यता कटियार
बी. ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

डिजिटल इंडिया और हिंदी

डिजिटल इंडिया अभियान से हमारे देश में कई क्रन्तिकारी बदलाव हुए हैं। यह चाहे रुपए-पैसे के लेन-देन के रूप में या ऑनलाइन खरीदारी और भोजन मंगाने के रूप में-सभी जगह डिजिटल अभियान का असर देखा जा सकता है। लेकिन इन सबके बीच भाषा से संबंधित एक सवाल जरूर उठता है कि क्या इस डिजिटल इंडिया में हिंदी भाषा का महत्व कम हो गया है? हिंदी के भविष्य को लेकर अक्सर लोग आशांकित रहते है क्योंकि हमारी ज़िन्दगी से जुड़े हर क्षेत्र में अंग्रेजी का वर्चस्व प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । परंतु इस तथ्य को कोई भी अस्वीकार या अनदेखा नहीं कर सकता कि हमारे सिनेमा में हिंदी का ही राज चलता है ।यहाँ तक कि दूसरे देशों से आकर हिंदी सिनेमा में अभिनय करने वाले लोगों को भी अपने लिए हिंदी शिक्षक की तलाश करनी ही पड़ती है। सिनेमा की तरह इन्टरनेट की दुनिया में भी फेसबुक,ट्विटर,आदि तक को हिंदी के आगे घुटने टेकने पड़े हैं, उन्हें हिंदी बोलने व समझने वाले लोगों के लिए हिंदी कीबोर्ड तक का इंतजाम करना पड़ा है।अब हिंदी का डिजिटल स्वरूप ब्लॉग,अखबारों,पत्रिकाओं के रूप में इन्टरनेट पर भी देखने को मिलता है।इसके अलावा हिंदी में ईमेल करने,ट्वीट करने और सर्च करने का तरीका भी उपलब्ध हो चुका है।यहाँ तक कि बहुत से प्रसिद्ध लोग सोशल मीडिया पर हिंदी में ही अपनी बात कहते हैं।इसलिए यह कहना गलत होगा कि डिजिटल इंडिया में हिंदी का महत्व कम हो गया है। बल्कि हिंदी के बढ़ते कदमों को देखकर हम हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के लिए निश्चिंत हो सकते हैं।

अदिति आनंद
बी. ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

स्वच्छ पर्यावरण: स्वस्थ देश

कहा जाता है कि " स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है " उसी प्रकार एक स्वच्छ पर्यावरण में ही देश का विकास हो सकता है| आजकल हमारे पर्यावरण के बिगड़ते संतुलन से मनुष्य व दूसरे जीवों को बहुत परेशानियां हो रही हैं । पर्यावरण को शुद्ध रखना किसी एक नागरिक की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि पूरे देश को मिलकर पर्यावरण को स्वच्छ बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए कुछ उपाय -अधिक वृक्षारोपण व उनकी देखभाल, परंतु आजकल विकास के नाम पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है और दूसरी तरफ उतना वृक्षारोपण नहीं किया जा रहा है ।इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है ।वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो गई है । जिससे अनेक रोगों की उत्पत्ति हुई है । पेड़-पौधे हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं । अपनी हर अवस्था में वे हमारे काम आते है। अत: हमें अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके स्वच्छ पर्यावरण की ओर कदम उठाना चाहिए।

शुद्ध पानी की बर्बादी पर रोक -हम जानते है कि पृथ्वी के बहुत बड़े हिस्से में समुद्र है, किंतु समुद्र का पानी पीने योग्य नहीं है । पीने का पानी पृथ्वी के गर्भ में है जिसकी मात्रा बहुत कम है । पहले झरने ,नदियां , तालाब आदि बहुत अधिक संख्या में थे ;जिनका पानी पिया जाता था, किंतु अब ज्यादातर सब सूख गए हैं जिसके कारण जल का अभाव हो गया है । हमें पानी को बेवजह नहीं बहाना चाहिए । वर्षा के पानी को दोबारा प्रयोग में लाने के लिए उपरोक्त संसाधनों को संरक्षित करना चाहिए । क्योंकि यदि पानी नहीं रहेगा तो पृथ्वी पर जीवन मुमकिन नहीं होगा।

प्रदूषण को नियंत्रित करना - आज पृथ्वी पर वायु, जल व ध्वनि प्रदूषण की मात्रा अत्यंत बढ़ गयी है। परिणामस्वरूप मानव व दूसरे जीवों को अनेक प्रकार के रोगों ने जकड़ लिया है । वायु प्रदूषण के बढ़ने से सांस से संबंधित रोग होते हैं| जल प्रदूषण के कारण हम स्वच्छ जल नहीं मिल पाता है तथा इससे पेट संबंधित रोग लग जाते हैं| ध्वनि प्रदूषण से हमारे कान के परदे तक फट जाते हैं । सभी प्रकार के प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार को नीतियां बनानी चाहियें और सबको उन पर अमल करना चाहिए ।

बीते कुछ वर्षों में हमारे देश में पर्यावरण को लेकर अनेक कार्य किए गए हैं, जिनके परिणाम भी सकारात्मक रहे हैं । प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए देश के प्रधानमंत्री से लेकर एक सामान्य व्यक्ति तक सभी को योगदान देना चाहिए| अभी तक किए गए प्रयास पर्याप्त नहीं हैं । हमें सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों का पालन करके पर्यावरण को स्वच्छ बनाने की कोशिश करनी चाहिए और सबको उनका साथ देकर एक स्वस्थ देश का निर्माण करना चाहिए।

अंशिका जैन
बी. ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

महिला सशक्तिकरण

पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कहा गया सबसे प्रसिद्ध वाक्य है- " लोगों को जगाने के लिए महिलाओं को जागृत करना चाहिए | एक बार जब वह आगे बढ़ती है तो परिवार पीछे चल पड़ता है, फिर गांव चलता है और फिर राष्ट्र चलता है |" यहां पर हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं , जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी दबावों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हों | दुनिया भर की महिलाएं आज जिस मुकाम पर हैं ,वहां पहुंचने के लिए उन्होंने बहुत संघर्ष किया हैं भारत जैसे विकासशील देश में भी महिलाएँ सशक्तिकरण के मामले में पीछे नहीं है| महिला सशक्तिकरण के लिए लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए| ताकि वह अपनी जिन्दगी में सही फैसले कर सकें | महिलाओं को अपने साथ हो रहे अन्याय का विरोध करना होगा | देश की हर महिला को संपूर्ण रुप से आत्मनिर्भर बनने के लिए जागरुक होना होगा तभी सही मायनों में महिला सशक्तिकरण हो पाएगा | अब वक्त आ गया है कि महिलाओं के विचारों का सम्मान करना परिवार और समाज का दायित्व है| प्रत्येक व्यक्ति की सकारात्मक सोच महिलाओं के उत्थान के साथ-साथ एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने में समर्थ रहेगी|

सिया ठाकुर
बी. ए प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

गरीबी

गरीबी एक ऐसा शब्द है जिसे सुनकर अच्छे-अच्छे कांप जाते हैं| लाखों लोग गरीबों का मजाक उड़ाते हैं | उन्हें ना खाना, ना पानी मिल पाता है| गरीबी इंसान को लाचार बना देती है इसलिए गरीब बेचारा लाखों के आगे सर झुकाता है| उनकी कहां शाम होगी, कहां सुबह होगी यह किसने समझा और जाना है | गरीब इंसान को बीमारी में दवा नहीं मिल पाती है| गरीब बेचारा लाखों के आगे हाथ फैलाता है| गरीबी अच्छे और बुरे कार्यों में फर्क मिटा देती है पेट भरना है बस यह बात याद दिलाती है| गरीबी हर हाल में जीना सिखा देती है, दो पैसे मांगने पर अमीर उसे दुत्कार देता है और रोज ना जाने रेस्टोरेंट में कितने पैसे टिप में दे आता है| अपनी अमीरी का रौब दिखाकर न जाने कितने लोग गरीबों का दिल दुखाते हैं| उसका जीवन कितना कष्टकारी है यह हर कोई नहीं समझ पाता| सच कहते हैं कि गरीब इंसान की पुकार हर कोई नहीं सुनता है पर जो सुन ले वह उनके लिए भगवान होता है| एक बार अपनी बड़ी-बड़ी गाड़ियों से थोड़ा बाहर निकल कर देखो जो अपने बच्चे का पेट भरने के लिए दर-दर भटक रही है, ना जाने कब से धूप में तड़प रही है, मैले कपड़ों में बच्चे का तन ढक रही है, अपनी कोई चिंता नहीं बच्चे के लिए धूप में जल रही है, चंद पैसों को बचाने के लिए वह मीलों तक चल रही है| संकट के समय में गरीब का एक- एक पल मुश्किल से कट

रहा है जरा गरीबों को देखो कैसे उनका घर चल रहा है| इंसानियत का कोई अस्तित्व नहीं हैं, गरीब पर कोई रहम जताने वाला नहीं है, कोई मदद करने वाला नहीं है| दुनिया की इस भीड़ में कोई गरीब की सुनने वाला नहीं है| आओ मिलकर यह कदम उठाएं, हम इंसान हैं, इंसानियत को निभायें | ऐसी स्थिति में आंसू भी सूख जाते हैं, अच्छा और बुरा सब भूल जाते हैं, परिवार की खातिर सब कुछ कर जाते हैं| गरीबी का यह खेल कब खत्म होगा|? हर पल जीवन के दिए बुझ रहे हैं |फिर से इंसानियत का धर्म निभा लो, एक बार फिर से जीत कर दिखा दो | किसी की मदद करने का अपना फर्ज पूरा करके दिखा दो| गरीबी को दूर करो, आओ मिलकर साथ दें -गरीब को नहीं गरीबी को हटाएं| अपना देश खुद बचाना है तभी देश से गरीबी दूर होगी |अपना कर्तव्य हमें खुद निभाना है, सारा काम खुद करके दिखाना है| एक ही नारा लगाना है- **गरीब को नहीं गरीबी को हटाना है**|

सोनू कुमारी
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

लॉकडाउन

इस समय पूरे देश में एक महामारी का प्रकोप फैला हुआ है। उसको हम ' कोरोना वायरस ' कहते हैं । इस वायरस के चलते बहुत लोगों ने अपनी जान गंवा दी है । जिसके चलते सरकार ने यह फैसला लिया कि कुछ महीनों तक सभी लोग अपने घरों में ही रहेंगे |पूरे देशभर में लॉकडाउन भी जारी किया गया। लॉकडाउन के चलते हम सब ने कुछ अनोखे अनुभव किए जो शायद आमतौर पर हम नहीं कर पाते। कल तक जो मास्क और सैनिटाइजर लोग कभी- कभी इस्तेमाल किया करते थे आज वह हर घर में मौजूद थे। देखते ही देखते वह सबके जीवन का अहम हिस्सा बन गया। लॉकडाउन में अपने परिवार के साथ समय बिताकर लोगों को संबंधों के महत्व का अनुभव हुआ। मैं कितनी खुशकिस्मत थी कि वह समय मुझे अपने माता- पिता के साथ व्यतीत करने को मिला। हमने खूब मजे किए, रोज नये व्यंजन बनाने सीखे। घर में सफाई में मां का हाथ बंटाया, तरह-तरह के गेम खेले। फोन से हटकर सबके साथ ज्यादा समय व्यतीत करने से आपस में प्रेम और अधिक बढ़ गया |हमारी पढ़ाई भी ऑनलाइन हुई, लेकिन लॉकडाउन के अपने ही कुछ नुकसान थे। बहुतों ने अपने परिवार वालों को खोया, लोगों की नौकरी चली गई, भुखमरी बढ़ गई, चीजों को दाम बढ़ गए मजदूरों का काम भी चला गया। देशभर में सबका काम ठप्प पड़ गया |सारी गतिविधियां रुक गयीं ,जिसके चलते आर्थिक स्थिति भी पूरी तरह डगमगा गयी| जब तक लॉकडाउन का यह सिलसिला चलता रहा काफी नुकसान होता रहा ।

इस महामारी से बचने के लिए सरकार द्वारा जारी किए गए निर्देशों का पालन करना आवश्यक है हर व्यक्ति को अपनी सावधानी के लिए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना है। बिना मास्क और सैनिटाइजर के बाहर

नहीं जाना चाहिए। सरकार द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर सबको मास्क और सैनिटाइजर उपलब्ध कराए जाएं, भीड़ जैसी जगहों पर लॉकडाउन जारी रहे, हॉस्पिटल की सुविधाएं सब तक पहुंचे यह ध्यान रहे । तभी इस महामारी से निकलकर साधारण जीवन की ओर कदम बढ़ाया जा सकता है|

वंशिता बिसनोई
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

जन्म शताब्दी वर्ष

अमृतराय

3 सितंबर 1921-14 अगस्त 1996

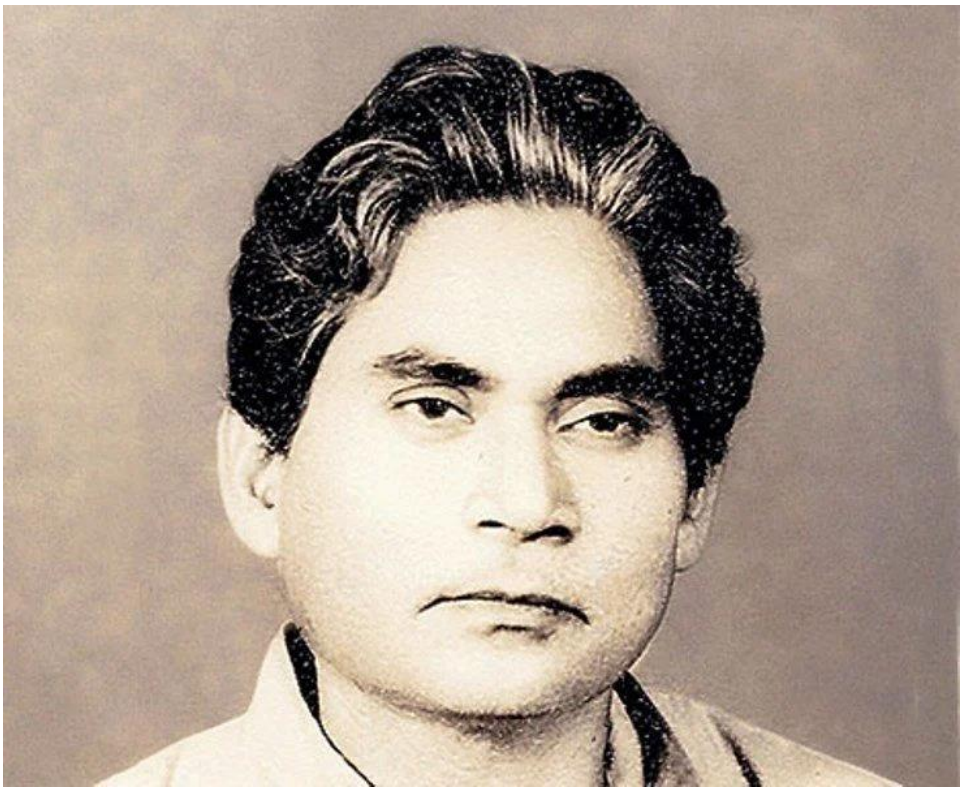

रंग-संयोजन

आईना

शिप्रा तिवारी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

पूजा-चौकी

प्रतीक्षा ब्रजवासी
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

कार्तिकेय और लक्ष्मी पादुका

प्रतीक्षा ब्रजवासी
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

विनायक

प्रतीक्षा ब्रजवासी
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

नृत्यमुद्रा

प्रीति मिश्रा
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

पेड़ की छांव तले

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

साथ चलते हुए

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

तेरा -मेरा साथ

हिमांशी कोली
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

माँ

सिल्विया नोंग्थोबाम
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

रंग-बिरंगी

मुस्कान
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

नादान परिंदे

महिमा शर्मा

हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

माँ की गोद

पवनप्रीत कौर
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

राष्ट्रीय पक्षी

नंदिनी वर्मा
बीए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

अपरिभाषित संसार

तेजस्विनी बैंडा
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

रहस्यमयी अंधेरा

नंदिनी वर्मा
बीए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

कैमरा और कॉलेज परिसर

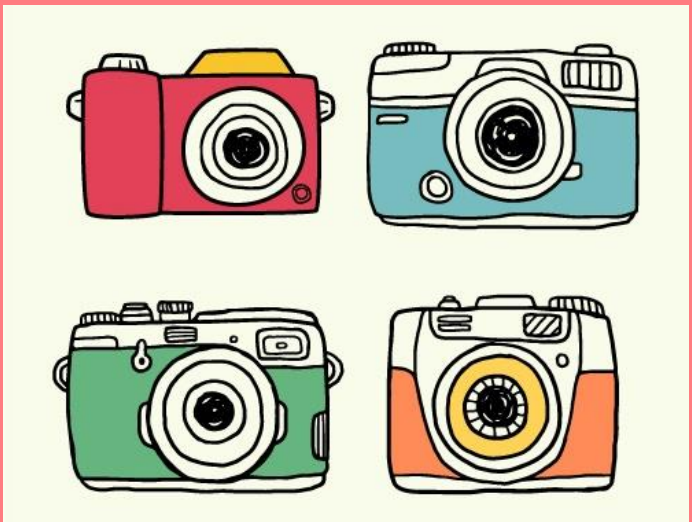

नीला आकाश

मनीषा

हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

खुलती खिड़की

विसीनो दिली

बी. ए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

खुला मंच

विसीनो दिली
बी. ए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

बास्केट बॉल कोर्ट

विसीनो दिली
बी. ए प्रोग्राम तृतीय व

बड़े पत्ते और आसमान

आस्था
हिंदी विशेष वित्तीय वर्ष

गहरा नीला आसमान

आस्था
हिंदी विशेष वित्तीय वर्ष

प्रतिच्छाया

आस्था
हिंदी विशेष वित्तीय वर्ष

मैत्रेयी कॉलेज

प्रतिबद्धता

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कॉलेज को ज्ञान केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करना